

Mr. Speaker: Hon. Members evidently are under the impression that their 'MP' will also disappear.

श्री म० ला० द्विवेदी : मैं यह जानना चाहता हूँ कि जहाँ सरकार ने इन पदों को हटाने का निश्चय किया था तो क्या सरकार इस भेदभाव को मिटाने के लिये तनख्वाहों में भी कोई कमी करेगी ?

श्री गो० ब० पन्त : जी नहीं, ऐसा कोई इरादा नहीं है ।

Control of Chit Funds

- +
- *266. { **Shri A. M. Tariq:**
Shri P. G. Deb:
Shri Ram Krishan Gupta:
Shri B. C. Mullick:

Will the Minister of Finance be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 2489 on the 9th September, 1960 and state whether any decision regarding regulation and control of Chit Funds in Delhi has been taken by now?

The Deputy Minister of Finance (Shri B. R. Bhagat): The matter is still under consideration.

श्री अ० सु० तारिक : क्या मैं यह जान सकता हूँ कि इस मामले को तय करने में कितनी मुद्दत लगेगी क्योंकि पिछले सेशन में भी एक क्वेश्चन के जवाब में यही कहा गया था कि मामला अभी जेरगौर है ?

[किया मैं जान सकता हूँ ?]
 اس معاملہ کو طے کرنے میں کتنی مدت لگیگی کہوں کہ پچھلے سیشن میں بھی ایک کویشن کے جواب میں یہی کہا گیا تھا کہ یہ معاملہ ابھی زیر غور ہے -]

श्री ब० रा० भगत : जल्दी से जल्दी कोशिश की जा रही है ।

श्री अ० सु० तारिक : मैं यह जानना चाहता हूँ कि पिछले सेशन और इस सेशन के दरमियान क्या वजारत मालियात के नोटिस में एसी शिकायतें आई हैं जिनमें यह कहा गया हो कि यह कम्पनियां गबन करती हैं या

इनका इंतजाम दुरुस्त नहीं है और अगर ऐसा है तो क्या उनसे तहकीकात की गई है ?

[میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ پچھلے سیشن کے درمیان کیا وزارت مالیات کے نوٹس میں ایسی شکایتیں آئی ہیں جن میں یہ کہا گیا ہو کہ کمپنیاں غبن کرتی ہیں یا ان کا انتظام درست نہیں ہے اور اگر ایسا ہے تو کیا ان سے تحقیقات کی گئی ہے -]

श्री ब० रा० भगत : अभी तक कोई ऐसी बड़ी शिकायत तो नहीं पहुंची है । अभी दिल्ली में २६ कम्पनियां हैं जोकि काम कर रही हैं और दिल्ली ऐडमिनिस्ट्रेशन अभी एक ऐसा कानून बनाने का विचार कर रही है कि यह सारी जो शिकायतें हैं और यह हो सकता है कि वे बेईमानी और गबन की हों, तो उनको दूर किया जा सके । यह ममला बड़ा संगीन है और हर एक पहलू से इस पर विचार किया जायगा ।

Hindi Encyclopaedia

- +
- *267. { **Shri Bahadur Singh:**
Shri Inder J. Malhotra:
Shri Nardeo Snatak:
Shri P. K. Deo:
Dr. Ram Subhag Singh:

Will the Minister of Education be pleased to state:

(a) whether the Kashi Nagari Pracharini Sabha has prepared the first volume of the proposed Hindi encyclopaedia, for the Government of India;

(b) how much time will be taken to publish the other volumes of this encyclopaedia;

(c) whether any aid has been given by the Government of India to the Kashi Nagari Pracharini Sabha for this purpose;

(d) if so, the amount thereof; and

(e) whether there is any proposal for compilation of similar encyclopaedia in other regional languages?

The Minister of Information and Broadcasting (Dr. Keskar): (a) Yes, Sir.

(b) Volume II of the Encyclopaedia is in the Press. The entire work is likely to be completed by the end of 1964.

(c) and (d). The expenditure on the preparation of the Encyclopaedia is to be met by the Government of India. A sum of Rs. 2.55 lakhs has so far been paid.

(e) The Ministry of Education have at present no proposal.

Shri Bahadur Singh: What are the special reasons for not giving any kind of aid to encourage the compilation of encyclopaedias of other regional languages?

Dr. Keskar: There is nothing which precludes aid from being given provided there are schemes. The present Hindi Encyclopaedia has been taken up because Hindi being accepted by the Constitution as the *lingua-franca* of the country it was felt desirable that there should be such an encyclopaedia. Without Government help it would probably not have come forth.

Shri Bahadur Singh: Did any organisation of the regional languages ask the Government for aid for this purpose?

Dr. Keskar: I cannot say anything. As I said, nothing precludes from giving help for such encyclopaedias in the regional languages also.

Dr. Vijaya Ananda: Will the Hindi Encyclopaedia be priced within the reach of the common man or is there any scheme of publishing a cheaper edition?

Dr. Keskar: It will not be very high-priced. That much I can say.

सेठ गोविन्द दास : क्या यह पहले खंड के तैयार होने में जो इतना समय लगा तो क्या उसका यह भी कारण हुआ कि सरकार से जो सहायता नागरी प्रचारणी सभा को

मिलनी चाहिये थी उसमें बहुत विलम्ब हुआ और यदि यह बात सही है तो क्या भविष्य में इस बात का ध्यान रक्खा जायेगा कि काम में देरी सहायता पहुंचने की वजह से न हो ?

डा० केसकर : मैं नहीं जानता कि विलम्ब जो हुआ वह सरकार से सहायता न मिलने के कारण हुआ। माननीय सदस्य एक प्रसिद्ध लेखक हैं और वे जानते हैं कि इतने बड़े काम को हाथ में लेने पर आरम्भ में कुछ विलम्ब अनिवार्य है वैसे मुझे पूरा विश्वास है कि आगे जो खंड प्रकाशित होंगे वे ज्यादा शीघ्रता से निकलेंगे।

श्री नरदेव स्नातक : क्या माननीय मंत्री ने हिन्दी विश्व कोष के प्रथम खंड को देखा है और यदि देखा है तो मैं जानना चाहता हूं कि उसकी शब्दावली सहल है या कठिन है ?

डा० केसकर : मुझे मालूम नहीं माननीय सदस्य की क्या राय है लेकिन एनसाक्लोपीडिया सब दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुये तैयार की गई है। माननीय सदस्य जानते हैं कि गृह मंत्री श्री गोविन्द बल्लभ पन्त उसके चेअरमैन हैं।

श्री बजर्राज सिंह : इस बात को ध्यान में रखते हुये कि हिन्दुस्तान के विधान में वह १२ भाषायें जिनको कि शैड्यूल में रक्खा गया है और वे राष्ट्रीय भाषायें कहलाती हैं, क्या सरकार यह इरादा रखती है कि वह यदि स्वयं नहीं तो राज्य सरकारों को मदद देकर अन्य भाषाओं में भी इस तरह के विश्व कोष जल्दी तैयार करने का प्रयत्न करे ?

डा० केसकर : माननीय सदस्य जो कह रहे हैं वह बिल्कुल सही है लेकिन शायद वह नहीं जानते कि कई राज्य सरकारें इस मामले में सहायता दे रही हैं और कई भाषाओं में विश्व कोष को तैयार हो गये हैं और प्रकाशित हो रहे हैं। हम यह उचित ही समझेंगे कि सब

भाषाओं में इस प्रकार के विश्व कोष प्रकाशित हों।

Shri Chintamani Panigrahi: May I know whether the Government is aware that the Sahitya Akademis in the different States are also encouraging publication of encyclopaedias in the regional languages? If so, has Government any scheme for extending any help to the Sahitya Akademis to encourage the publication of regional encyclopaedias and has the Sahitya Akademi of Orissa, asked for any help?

Dr. Keskar: There is no specific proposal for encouragement, but I can assure the hon. Member that such proposals will be encouraged when they come forth. It is not that a circular is sent to the Sahitya Akademis saying that they should do so. I think of their own most States are taking steps and in fact some of the more advanced languages have already done so. They have got very good encyclopaedias.

The Minister of Scientific Research and Cultural Affairs (Shri Humayun Kabir): May I supplement that? Actually grants are being given. They have been given already.

श्री भक्त दर्शन : जहाँ तक मुझे ज्ञात है इस विश्व कोष के तैयार किये जाने में लगभग ४, ५ वर्ष का समय लग गया और अभी यह कहा जा रहा है कि सन् १९६४ में यह कार्य पूरा हो जायेगा तो क्या इस कार्य को करने में शीघ्रता लाने का प्रयत्न किया जायगा ?

डा० केसकर : अवश्य प्रयत्न किया जायेगा ।

श्री म० ला० द्विवेदी : मैं जानना चाहता हूँ कि क्या इस विश्व कोष के तैयार करने के लिये विभिन्न भाषाओं के हिंदी विशेषज्ञों को भी सम्मिलित किया गया है और भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय से क्या ऐसे कोई विशेषज्ञ हिन्दी जानने वाले इस विश्व कोष के तैयार करने के संबंध में रक्खे गये हैं और यदि हाँ तो वे कौन हैं ?

डा० केसकर : उसके लिये एक एक्सपर्ट कमेटी बिठा दी गई थी और उसके मेम्बरान यह हैं। उसके चेयरमैन हैं श्री हुमायून् कबिर और मेम्बरान हैं श्री इन्द्र विद्या वाचस्पति, श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा० डी० एस० कुठारी, श्री नील कंठ शास्त्री, श्री बाबू राम सक्सेना, श्री राज बली पांडे और श्री सिद्धेश्वर वर्मा। श्री अग्निहोत्री उसके सेक्रेटरी हैं।

Shri Thirumala Rao: May I know whether there is any machinery in the Government to see that the technical terms that are incorporated in this Encyclopaedia and also the technical terms that are being published from time to time by Government do not vary largely and that there is some co-ordination and correspondence between these technical terms?

Dr. Keskar: This question is being kept in view in formulating not only this Encyclopaedia but rather the vocabulary of technical terms that the Government is preparing

Bank Accounts in Foreign Countries

+

268. { **Shri Rajeshwar Patel:**
Shri Ram Krishan Gupta:
Shri S. A. Mehdi:
Shri P. G. Deb:

Will the Minister of Finance be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 471 on the 17th August, 1960 and state:

(a) whether investigations regarding the alleged accounts of Shri S. P. Jain with Banks in foreign countries have been finalised;

(b) if so, the result thereof; and

(c) the nature of action taken in this regard?

The Deputy Minister of Finance (Shri B. R. Bhagat): (a) No Sir, investigations regarding the alleged dollar accounts of Shri S. P. Jain in U.S.A. are still continuing.

(b) and (c). Do not arise.